2 फरवरी 2023
कुल पृष्ठ : 8
मूल्य :2/-

जैन पथप्रदर्शक

फरवरी (प्रथम)
वर्ष : 45
अंक : 21

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आर. एन. आई. 31109/77
JaipurCity / 224 / 2021-23

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

सदी का सबसे बड़ा.....

श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

देश-विदेश में जैनधर्म की धूम मचाकर सानन्द सम्पन्न

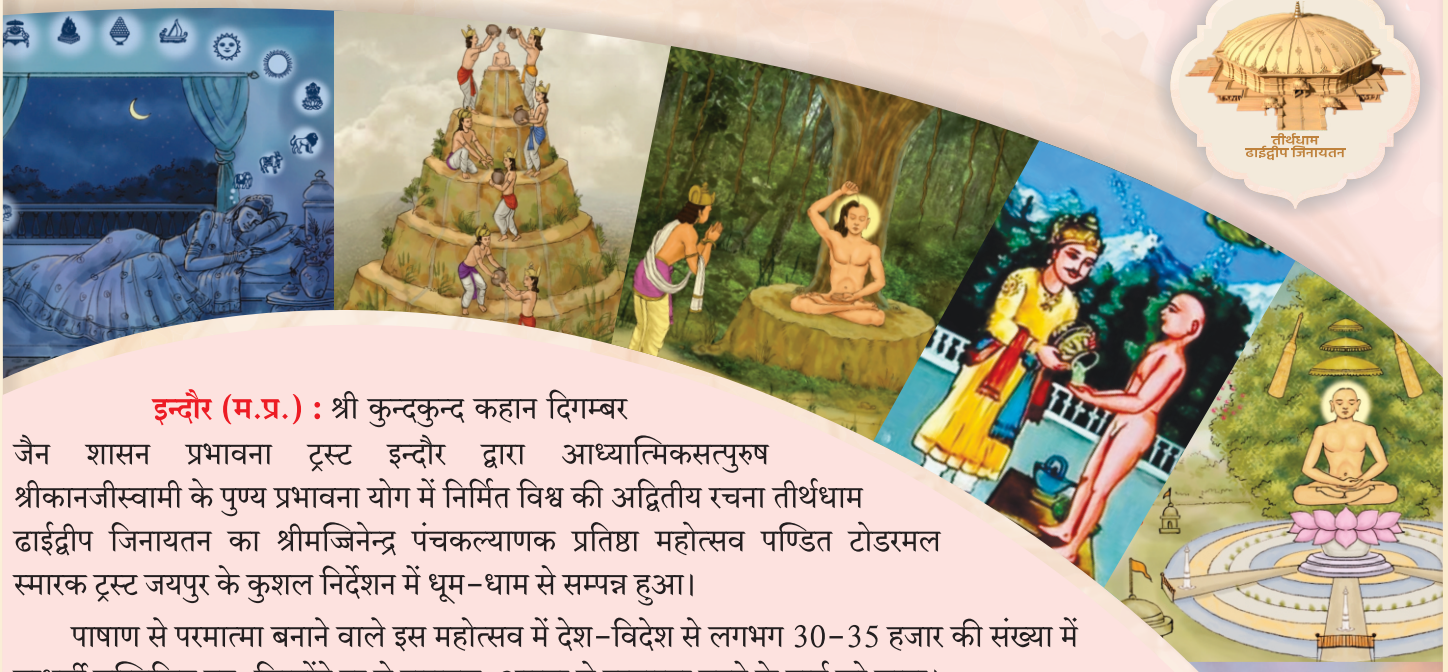

इन्दौर (म.प्र.) : श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इन्दौर द्वारा आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में निर्मित विश्व की अद्वितीय रचना तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन का श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के कुशल निर्देशन में धूम-धाम से सम्पन्न हुआ।

पाषाण से परमात्मा बनाने वाले इस महोत्सव में देश-विदेश से लगभग 30-35 हजार की संख्या में साधर्मी सम्मिलित हुए, जिन्होंने नर से नारायण, आत्मा से परमात्मा बनने के मार्ग को जाना।

यह पंचकल्याणक महोत्सव 20 जनवरी से 26 जनवरी 2023 तक मनाया गया, जिसमें प्रथम दिन 20 जनवरी को उद्घाटन समारोह एवं गर्भ कल्याणक की पूर्व क्रिया स्वरूप 16 स्वप्नों के मनोरम दृश्य दिखाए गए। 21 जनवरी को गर्भ कल्याणक मनाया गया। 22 जनवरी को जन्म कल्याणक पर बाल तीर्थंकर का 1008 कलशों के माध्यम से सुमेरु पर्वत के शिखर पर बाल तीर्थंकर का जन्माभिषेक हुआ एवं रात्रि में पालना झूलन के कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा। 23 जनवरी को दीक्षा कल्याणक के दिवस पर ऋषभदेव के वैराग्य की प्रस्तुति दिखाई गई, जिससे पूरा माहौल वैराग्यमय हो गया। 24 जनवरी को दानतीर्थ के प्रवर्तन स्वरूप आहार दान की विधि सम्पन्न हुई। 25 जनवरी को भगवान के ज्ञानकल्याणक महोत्सव पर मनोहारी समवशरण की रचना हुई, जिसमें भगवान ऋषभदेव की मंगलकारी दिव्यध्वनि का प्रसारण किया गया। 26 जनवरी को ढाईद्वीप में 1164 प्रतिमाओं को प्राण प्रतिष्ठा कर विराजमान किया गया।

सम्पादकीय

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (सह-सम्पादक)

ढाईद्वीप का पंचकल्याणक : एक अभूतपूर्व आयोजन

ढाईद्वीप का पंचकल्याणक सम्पन्न होगया और अपने पीछे छोड़ गया अनेकों सुखद अहसास, अहोभाव, आश्चर्य एवं शुकून और एक दृढसंकल्प भगवान बनने का।

सचमुच ऐसा प्रतीत होता था कि मानो साक्षात सौधर्म इन्द्र ही इसका व्यवस्थापक हो; हालांकि इसमें 30 से 35 हजार लोगों ने भाग लिया, पर न कहीं कोई कोलाहल, न आपाधापी, न ही धक्कामुक्की। कोई अभाव नहीं, कोई असंतोष नहीं। मात्र वाह-वाह, समभाव, साम्यभाव, परिणामों की निर्मलता और वीतरागता की उपासना। सम्पूर्ण रूप से त्रुटिरहित इसप्रकार की व्यवस्था तो देव ही कर सकते हैं।

सारा वातावरण अध्यात्ममय वीतरागता से परिपूर्ण। पूजन हो या भक्ति, राजसभा हो या इंद्रसभा, गोष्ठियाँ हों या प्रवचन सभी वीतरागता से ओतप्रोत।

यह पूज्य गुरुदेवश्री कनजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग का प्रताप और पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की नीतियों, समर्पित कार्यकर्ताओं और कुशल प्रबंधन शक्ति का ही सुफल है कि इसप्रकार का भव्य आयोजन सम्पन्न हो सका।

इस पंचकल्याणक ने इतिहास में कई कीर्तिमान दर्ज करवाए है।

यथा –

- एक ही दिन में एक साथ 1164 जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा और स्थापना।
- सम्पूर्ण पंचकल्याणक में जुलूस आदि में किसी भी पशु का उपयोग न किया जाना।
- कोई बोली नहीं।
- यथासंभव कम से कम घोषणाएं।
- माला और मान-सम्मान से परहेज।
- सम्पूर्ण कार्यक्रम आत्मानुशासित।

अदृश्य व्यवस्थापकों द्वारा संचालित सम्पूर्ण महोत्सव जहाँ समुचित व्यवस्थाएं तो दिखाई देती थीं, पर कोई व्यवस्थापक दिखाई न देता था। 30 से 35 हजार लोगों की सहभागिता, आवास और भोजन की समुचित व्यवस्था एवं सीमित समय में यथासमय सबकुछ सम्पन्न हो जाना।

सहभागी इसका आनंद लेते रहे और समीक्षक दांतों तले अंगुली दबाते रहे। जो आ सके वे चले आये और जो न आ सके उन्होंने घर बैठे ऑनलाइन इसका सम्पूर्ण लाभ लिया।

दूसरी ओर अनेक लोग ऐसे भी हैं जो अभी भी इस प्रश्न का उत्तर खोजने में व्यस्त हैं। कि आखिर ये मुट्ठीभर लोग ऐसे आयोजन कर कैसे लेते हैं?

ढाईद्वीप एक व्यक्ति का स्वप्न, जो कालान्तर में जन-जन का स्वप्न बन गया और अंतत: वह असंभव-सा दिखने वाला स्वप्न साकार भी हुआ।

पंचकल्याणक के महत्त्वपूर्ण तथ्य

सर्वज्ञ भगवान कैसे होते हैं और उन्होंने आत्मा का कैसा स्वरूप कहा है? – यह पहिचानकर, अपनी आत्मा का भान प्रगट करना ही महोत्सव है और वही कल्याण का मार्ग है।

यह तो भगवान की प्रतिष्ठा का महोत्सव चल रहा है। भगवान ने जैसा कहा, वैसी आत्मा की महिमा और पहिचान ही सच्चा महोत्सव है।

परमार्थ से तो आत्मस्वभाव की जो अनन्त ज्ञानमय सम्पत्ति है, उसे प्रगट करके राग का अभाव करना ही महोत्सव है।

भगवान के प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रीतिभोज में आत्मा के पकवान परोसे जा रहे हैं। बादाम, पिस्ता और लड्डूरूप जड़ का भोजन जो सब कराते हैं, परन्तु यहाँ तो आत्मा का अमृत परोसा जा रहा है, उसको चखे तो मोक्षदशा हुए बिना नहीं रहेगी।

जो जीव इन अरिहन्त भगवान की प्रतिष्ठा करता है, वह जीव अल्पकाल में भगवान हुए बिना नहीं रहता।

देखो, यह प्रतिष्ठा के महोत्सव में आत्मा के स्वभाव की बात समझे तो अपनी आत्मा में धर्म की प्रतिष्ठा होती है।

जिसने अपनी आत्मा में भगवान की प्रतिष्ठा की, वह अल्पकाल में साक्षात् भगवान हो जाएगा।

यह महोत्सव अनन्त भवों का नाशक है।

'सिद्ध समान सदा पद मेरो' अर्थात् मैं सिद्ध हूँ, त्रिकाल अखण्ड आनन्दस्वरूप हूँ – ऐसे आत्मभानसहित श्री ऋषभदेव गर्भ में आये थे, ऐसे भानसहित जन्मे और ऐसे भानसहित भव से पार हुए।

मैं तो ज्ञातास्वभावी ध्रुव हूँ, मेरे ध्रुवस्वभाव के आश्रय से ही मेरा कल्याण है।

– आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

झंडारोहण एवं गर्भकल्याणक पूर्वक्रिया

20 जनवरी का दिन गर्भकल्याणक की पूर्व भूमिका के रूप में मनाया गया, जिसमें प्रातःकाल मंगलगायन एवं जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् भव्य रथयात्रा एवं मंगल कलश शोभायात्रा ढाईद्वीप जिनायतन से प्रारम्भ होकर महोत्सव स्थल अयोध्या नगर के द्वार पर पहुँची। जहाँ विशाल जनसमुदाय के मध्य धर्मध्वजा फहराकर श्रीमती सृष्टी-यशजी, श्रीमती सोनल-मुकेशजी परिवार इन्दौर ने पंचकल्याणक का मंगल शुभारम्भ किया। ध्वजारोहण स्थल पर ही महोत्सव के मंगलाचरण स्वरूप मांगलिक नृत्य अष्टकुमारियों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

उद्घाटन समारोह

प्रतिष्ठामण्डप का उद्घाटन श्री कमलजी, सुपुत्र साकेतजी-सहजजी बड़जात्या परिवार, मुम्बई एवं प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्रीमती आशा-नरेशजी एवं श्रीमती नम्रता-आकिन्चनजी लुहाडिया परिवार, दिल्ली ने किया।

इस अवसर पर श्रीमती कमलप्रभाजी बड़जात्या परिवार, इंदौर ने आचार्य धरसेन; श्रीमती सुषमाजी धर्मपत्नी कैलाशचन्द्रजी छाबड़ा परिवार, मुम्बई ने आचार्य कुन्दकुन्द; श्री पदमकुमारजी, विकासजी-वैभवजी-वरुणजी पहाड़िया परिवार, इंदौर ने आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी; पण्डित शिखरचंदजी, संजयजी-राजीवजी-आलोकजी जैन परिवार, विदिशा ने आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के चित्र का अनावरण किया। साथ ही टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा मंगल नृत्य प्रस्तुत किया गया।

पंचकल्याणक में इंद्र-इंद्राणी के पात्रों की इंद्र प्रतिष्ठा की गई। इसी के साथ यागमण्डल विधान भी सम्पन्न हुआ, जिसका उद्घाटन श्रीमती भारतीबेन-विजयभाई परिवार (हाथरस वाले) दादर-मुम्बई ने किया।

प्रतिष्ठामण्डप की वेदी पर विधि-अध्यक्ष श्री जिनेन्द्र भगवान डॉ. अशोकजी पलाश-पर्युलजी जैन, इंदौर ने विराजमान किए। नान्दीविधान एवं वेदी पर मंगल कलश स्थापना श्रीमती चंद्रकान्ताजी पाटनी, इन्दौर ने की। वेदी पर जिनवाणी विराजमान श्रीमती ऋतु-अशोकजी, कृतिजी, सौम्याजी परिवार इंदौर ने की तथा श्री यागमण्डल विधान आमंत्रणकर्ता एवं मुख्य मंगलकलश विराजमानकर्ता श्रीमती भारतीबेन-विजयभाई जैन, परिवार मुम्बई, रहे। तदुपरान्त आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरूदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन का प्रसारण किया गया।

16 स्वप्न

रात्रि में ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन में समाधि की चर्चा के पश्चात् इन्द्रसभा व राज्यसभा लगीं, जिसमें प्रश्नोत्तरों के माध्यम से तीर्थंकर के गर्भ के छह माह पूर्व होने वाली तात्त्विक चर्चाएँ हुईं। 56 कुमारियों के नृत्य के उपरान्त माता मरूदेवी द्वारा देखे गये 16 स्वपनों के मनोहर दृश्य दिखाए गए, जो कि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्म का संकेत दे रहे थे।

गर्भकल्याणक महामहोत्सव

21 जनवरी को गर्भकल्याणक मनाया गया, जिसमें माता मरूदेवी रात्रि में देखे सोलह स्वपनों का फल जानने की जिज्ञासा से अयोध्या की राज्यसभा में महाराजा नाभिराय के पास गईं, वहाँ अत्यधिक उत्सुकता के साथ माता ने क्रमश: रात्रि में आए स्वप्नों का वृत्तांत सुनाया एवं राजा नाभिराय ने विशेष ज्ञान से उनका फल बतलाया। उक्त घटनाक्रम का एक नव-निर्मित भजन एवं नृत्य के माध्यम से राज्यसभा में भव्य प्रदर्शन किया गया। भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती चन्द्रकान्ताजी-आनन्दकुमारजी पाटनी ने प्राप्त किया।

अवधिज्ञान के प्रयोग से इस युग के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के गर्भ कल्याणक का शुभ समाचार इंद्रलोक के इंद्रों ने जाना एवं इंद्रसभा में गर्भ कल्याणक से संबंधित चर्चाएँ हुईं। तत्पश्चात् इन्द्र-इंद्राणियों द्वारा गर्भकल्याणक की पूजन की गई।

वेदी-ध्वज-कलश शुद्धि

दोपहर में अयोध्या नगर से ढाईद्वीप जिनायतन तक घटयात्रा निकाली गई, जिसमें मंदिर की शुद्धि एवं 30 विशाल वेदियाँ जिसमें ढ़ाईद्वीप से संबंधित 10 क्षेत्र के त्रिकाल चौबीसी की 720 वेदियों के अतिरिक्त एक भरत एवं बाहुबली की वेदी, एक विश्व की सीमंधर भगवान की स्फटिकमणि की सबसे बड़ी प्रतिमा सहित विदेहक्षेत्र स्थित 19 तीर्थंकरों की वेदियाँ, धातु से निर्मित 2 प्रतिमाओं की वेदियों, पंचमेरु स्थित 100 वेदियों एवं 300 से अधिक रत्नों से निर्मित जिनबिम्बो की वेदियों की शुद्धि की गई। ढाईद्वीप जिनायतन के आकर्षक कार्विग युक्त शिखर पर 12 फीट ऊँचे विशाल स्वर्णकलश एवं 14 फिट ऊँचे स्वर्ण ध्वजदण्ड की शुद्धि भी की गई। इस घटयात्रा में महिलायें केसरिया वस्त्र पहनकर अपने मस्तक पर कलश धारण कर सम्मिलित हुईं।

रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् माता मरूदेवी की सेवा में उपस्थित अष्टदेवियों ने माता मरूदेवी के साथ मार्मिक तत्त्वचर्चा की। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के "समाधि का सार" विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला एवं भरत के अन्तर्द्वन्द्व की गीतरूप नाट्य प्रस्तुति की गई।

जन्मकल्याणक पर जन्माभिषेक

22 जनवरी को प्रातः जन्मकल्याणक के दिन इंद्रलोक में इन्द्रसभा एवं अयोध्या नगरी में राजसभा का आयोजन किया गया। इन्द्रसभा में धर्मतीर्थ के प्रवर्तक बाल तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्म के क्षण सौधर्म इंद्र के सिंहासन कंपायमान होने एवं बाद्ययंत्रों से तीनलोक के गुंजायमान होने का आह्लादकारी अद्भुत दृश्य दिखाया गया। अवधिज्ञान से बाल तीर्थंकर के जन्म का समाचार जानने के पश्चात् शची इंद्राणी ने अयोध्या के राजमहल में प्रवेशकर सर्वप्रथम बाल तीर्थंकर के तेजयुक्त मुखमण्डल को देखा फिर सौधर्म इन्द्र 1008 नेत्र बनाकर उनके अलौकिक सौंदर्य को टकटकी लगाकर निहारते रहे। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनने का सौभाग्य श्री कमलजी-उषाजी पाड़लिया इन्दौर ने प्राप्त किया।

1008 कलशों से जन्माभिषेक

जन्मकल्याणक की भव्य एवं विशाल शोभायात्रा अयोध्या नगरी से प्रारंभ होकर सुपर कोरिडोर चौराहे पर निर्मित पांडुकशिला पर समाप्त हुई। जिसमें सर्वप्रथम धर्मध्वज, धर्मचक्र तथा ऐरावत हाथी पर सौधर्म इन्द्र के अतिरिक्त महेन्द्र का रथ, सनत्कुमार का रथ, ईशान इंद्र का रथ, कुबेर का रथ एवं इन्द्रसभा के समस्त इंद्र 16 रथों पर सवार हुए। कुबेर इस अवसर पर प्रसन्न होकर रत्नों की वर्षा कर रहे थे।

पाण्डुकशिला पर बाल तीर्थंकर का शुद्ध जल से भरे 1008 कलशों से जन्माभिषेक किया गया। प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री ने सभी मनुष्य गति के जीवों में इंद्रप्रतिष्ठा कर उन्हें जन्माभिषेक करने का सौभाग्य प्रदान किया। 1008 कलशों से भगवान के अभिषेक को देखकर साधर्मीजनों में आनंद व उत्साह की लहर दौड़ गई। अभिषेक के पश्चात् इन्द्रों द्वारा जन्मकल्याणक की पूजन संपन्न हुई। बाल तीर्थंकर के प्रथम अभिषेक का सौभाग्य प्राप्त करने की प्रसन्नता से अभिभूत होकर प्रसन्नचित्त सौधर्म इन्द्र ने अयोध्या नगर के द्वार पर ताण्डव नृत्य किया।

पालना झूलन

रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति हुई एवं अयोध्या नगर में भव्य पालना झूलन का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश से पधारे अनेक राजाओं ने बाल तीर्थंकर को पालना झुलाया। पालना झूलन का यह अदभुत कार्यक्रम लगभग 3 घंटे तक चलता रहा। इस पालना झूलन के अवसर पर मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंहजी चौहान उपस्थित रहे। भगवान के पालना झूलन का सौभाग्य मिलने से उन्होंने अपने जीवन को धन्य बताया

मुख्यमंत्री द्वारा डॉ. भारिल्ल का सम्मान

जैनदर्शन के प्रकाण्ड विद्वान अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के इन्दौर नगर में पधारने पर मध्यप्रदेश के मुखिया होने के नाते माननीय मुख्यमंत्री श्रीमान शिवराजसिंहजी चौहान ने स्वागत एवं तिलक लगाकर विशेष सम्मान किया। उन्होंने कहा कि डॉ. भारिल्ल हमारे मध्यप्रदेश की धरा पर आए यह हमारे लिए अत्यन्त गौरव की बात है।

दीक्षाकल्याणक पर वैराग्यमयी वातवरण

23 जनवरी को प्रातःकाल मंगलगायन, जिनेन्द्र पूजन एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त इंद्रलोक में इन्द्रसभा आयोजित हुई, जिसमें मुनियों के स्वरूप एवं महिमा से संबंधित चर्चाएँ हुईं। राजकुमार ऋषभदेव का अयोध्या के राजसिंहासन पर राज्याभिषेक एवं अयोध्या नरेश को शुभकामनाएं देने हेतु भरत-बाहुबली एवं ब्राह्मी-सुन्दरी का आगमन हुआ।

इस परिवार मिलन के शुभ अवसर पर राज्यसभा में नीलांजना का नृत्य प्रस्तुत किया जा रहा था, अकस्मात देवी की आयु पूर्ण होने पर भावी तीर्थंकर ऋषभदेव के सभा में भंग न पड़े इस उद्देश्य से नीलांजना के स्थान पर उसी क्षण अन्य देवी को इन्द्र ने भेज दिया; परंतु ऋषभदेव ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से इस घटना को जान लिया संसार की क्षणभंगुरता को देखकर अंतरंग में वैराग्य भाव जाग उठा। परिणाम स्वरूप मुनिधर्म अंगीकार करने के भाव संजोऐ। लोकांतिक देवों ने पधार कर वैराग्य की अनुमोदना की। भावी तीर्थंकर ऋषभदेव की प्रथम पालकी उठाने का सौभाग्य प्राप्त कर मानवों से अपने जीवन को धन्य किया।

दीक्षा विधि

तत्पश्चात् दीक्षा हेतु राजभवन से वन की ओर प्रस्थान किया। दीक्षावन में बारह भावना का पाठ, वैराग्यमयी प्रवचन, तीर्थंकर की दीक्षाविधि के बाद दीक्षाकल्याणक की पूजन हुई।

आहार दान

तीर्थंकर मुनिराज की नवधाभक्तिपूर्वक दानतीर्थ के प्रवर्तन स्वरूप सर्वप्रथम राजा श्रेयांश के कर कमलों से आहारविधि विधि पूर्वक सम्पन्न हुई। राजा श्रेयांश के रूप में प्रथम आहारदान का सौभाग्य श्री संजयजी दीवान परिवार, सूरत का एवं द्वितीय आहारदान का सौभाग्य श्रीमती किरण-अशोकजी, अरिहंत कैपिटल परिवार इंदौर ने प्राप्त किया। बाद में अंकन्यास, प्राण-प्रतिष्ठा आदि अंतरंग क्रियायें प्रतिष्ठाचार्यों के निर्देशन में हुईं।

सायंकाल तीर्थंकर मुनिराज की भक्ति के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के व्याख्यान एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी के जीवन पर आधारित अहमेक्को खलु शुद्धो नामक नाटिका मुम्बई के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत की गई, जिसे देख उपस्थित जनसमुदाय रोमाचिंत हो गया।

ज्ञानकल्याणक पर ज्ञान का सम्मान

प्रातःकाल मंगलगायन, जिनेन्द्र पूजन एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त दोपहर में शोभायात्रा अयोध्या नगर से ढाईद्वीप जिनायतन तक पहुँची, वहाँ जिनवाणी स्थापना, जिनवाणी की वेदी पर कलश व ध्वज विराजमान एवं शिखर पर कलशारोहण एवं ध्वजारोहण किया गया। शिखर पर स्वर्णकलश विराजमान करने का सौभाग्य श्री आदीश्वरजी, विशुजी, एकांशजी एवं श्री राजेशजी, सरिताजी, हिमांशुजी परिवार सूरत को एवं स्वर्णध्वज चढ़ाने का सौभाग्य श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल पद्मोपुकुर कोलकाता को मिला।

इस अवसर पर पधारे विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा पंचकल्याणक एक अनुशीलन, आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं विश्व की अद्वितीय रचना ढाईद्वीप विषय पर तीन विद्वत संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

भगवान ऋषभदेव को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई एवं कुवेर इंद्र द्वारा अलौकिक सौंदर्य युक्त समवशरण की रचना की गई जहाँ भगवान ऋषभदेव की प्रथम दिव्यध्वनि का प्रसारण हुआ। अन्त में इन्द्रों द्वारा केवलज्ञान कल्याणक की पूजन की गई।

सम्मान समारोह

इस अवसर पर कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट द्वारा ढाईद्वीप के स्वप्नदृष्टा श्री मुकेशजी जैन एवं तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में अपना विशिष्ट योगदान देने वाले बाबू जुगलकिशोरजी युगल कोटा, अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, वाणी-भूषण पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित चेतनभाई महेता राजकोट का मरणोपरान्त सम्मान किया गया।

विद्वतद्वय का सम्मान

इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा जैनदर्शन व वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में निःस्वार्थ भाव से उत्कृष्ट सेवा देने हेतु न्याय के प्रकाण्ड विद्वान, कुशल लेखक डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली एवं करणानुयोग के सुप्रसिद्ध विद्वान, ढाईद्वीप जिनायतन के निर्देशक अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर को विशाल जनसमुदाय के मध्य विशेष रूप से सम्मानित किया गया। यह सम्मान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की साक्षी में हुआ जिसका संचालन श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने ट्रस्ट के उद्देश्यों और रीति-नीति पर प्रकाश डाला।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित वैराग्य महाकाव्य पर आधारित वैराग्य नाटक का मंचन हुआ एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों पर आधारित 'समय की ओर' डॉक्यूमेंट्री दिखाई।

2 फरवरी 2023, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य :2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

मोक्ष कल्याणक पर 1164 जिनबिम्बों की प्राण प्रतिष्ठा

26 जनवरी को 1164 जिनबिम्बों की प्राण प्रतिष्ठा कर, पाषाण से परमात्मा बनाने वाली यह प्रक्रिया श्रीमद् जिनेंद्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न हुआ। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सदी का ऐतिहासिक पंचकल्याणक रहा। भव्य ढाईद्वीप जिनायतन, भव्य प्रतिष्ठा मंडप, हर स्थल एवं प्रत्येक कार्यक्रम अपनी भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रातःकाल मंगलगायन एवं जिनेन्द्र पूजन, दशभक्ति पाठ एवं निर्वाण महोत्सव की विधि मोक्ष कल्याणक पूजन के पश्चात् विधिप्रतिष्ठा मंडप से ढाईद्वीप जिनायतन तक श्री जिनेन्द्र भगवान की शोभा यात्रा निकाली गई एवं ढाईद्वीप जिनायतन में पंचमेरू सम्बन्धित 80, वक्षारगिरी सम्बन्धित 80, गजदंत सम्बन्धित 20, कुलाचल सम्बन्धित 30, विजयार्ध सम्बन्धित 170, कुरू सम्बन्धित, ईश्वाकार, मानुषोत्तर सम्बन्धित 398, पांच भरत और पांच ऐरावत के त्रिकाल चौबीसी सम्बंधित 720, विद्यमान बीस तीर्थंकर की ऊपर 20 और नीचे 20, 1 भरत, 1 बाहुबली, 1 स्फटिकमणि की, 1 स्वर्ण जिन प्रतिमा, 1 रजत जिन प्रतिमा, 1 विधि नायक - इसप्रकार कुल 1164 जिनबिम्ब विराजमान हुए।

जन्म कल्याणक का नमीमय वातावरण ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो साक्षात कैलाश पर्वत पर जाकर भगवान आदिनाथ को मोक्ष हो रहा हो।

प्रदर्शनी : टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

इस अवसर विश्व की आग्रणी संस्था पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के विगत 55 वर्षों के स्वर्णिम इतिहास तथा महाविद्यालय व ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे तत्त्वप्रचार के क्षेत्र उल्लेखनीय व महत्त्वपूर्ण कार्यों, संचालित गतिविधियों को प्रदर्शनी के रूप प्रस्तुत किया गया।

प्रदर्शनी : गुरु कहान कला संग्रहालय, सोनगढ़

इस प्रतिष्ठा महोत्सव में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई एवं गुरु कहान कला संग्रहालय सोनगढ़ द्वारा अध्यात्मक्रान्ति के जनक गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा प्रदत्त तत्त्वज्ञान, उनके वचनों का सार बताने वाली एवं उनके प्रभावना योग को दर्शाने वाली आध्यात्मिक चित्रों व कलाकृतियों से सम्पन्न प्रदर्शनी लगाई गई।

जिसका उद्घाटन मुम्बई से पंचकल्यायणक प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारे श्री नीमेशभाई शाह, श्री हितेनभाई सेठ, श्री अक्षयभाई दोषी एवं डॉ. भारिल्ल ने अपने कर-कमलों से किया।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 जनवरी 2023

प्रति,